पूर्ण संख्या—४२

ट्यूनिस देश

कुछ प्रसिद्ध लेख

फरवरी १९४३] **देश-दर्शन** [मार्गशीर्ष १९९९

(पुस्तकाकार सचित्र मासिक)

वर्ष ४] { संख्या ८
पूर्ण संख्या ४२

ट्यूनिश

सम्पादक

पं० रामनारायण मिश्र, बी० ए०

प्रकाशक

भूगोल कार्यालय, इलाहाबाद

Annual Subs. Rs. 4/-
Foreign Rs. 6/-
This copy As. -/6/-

वार्षिक मूल्य ४)
विदेश में ६)
इस प्रति का ।=)

विषय-सूची

स्थिति

स्थिति तथा विस्तार

ट्यूनिशिया-देश उत्तरी अफ्रीका में फ्रांसीसी छत्र-छाया में है। इसके उत्तर भूमध्य सागर, दक्षिण में सहारा रेगिस्तान अल्जीरिया, पूर्व में लीबिया और पश्चिम में अल्जीरिया का देश है। यह देश ३०° से ३७'१२° उत्तरी अक्षांश और ७'३५° से ११'४०° पूर्वी देशान्तर के मध्य फैला हुआ है। इसका क्षेत्र-फल ४६००० वर्ग मील से कुछ ही कम है। इसमें २१५०० वर्ग मील सहारा प्रदेश भी सम्मिलित है। शारजेरिड के आगे सहारा प्रदेश है। यह देश जिब्राल्टर प्रणाली तथा स्वेज़ नहर के लगभग मध्य में स्थित है। सिसली इसके ठीक सामने है। यह सिसली के साथ मिल कर पूर्वी भूमध्य सागर को पश्चिमी भूमध्य सागर से अलग करता है। इसी उत्तम स्थिति के कारण प्राचीन काल में कार्थेज सामाज्य की उन्नति हुई थी। ट्यूनिशिया देश में लगभग ६०० मील समुद्र-तट है। समुद्र-तट इतना लम्बा होने के कारण ट्यूनिस का महत्व आर्थिक तथा राजनैतिक दृष्टि से और भी अधिक बढ़ जाता है।

देश दर्शन

प्राकृतिक दशा तथा बनावट

ट्यूनिशिया के पर्वत आदि काली टर्शियरी तथा गौण शिलाओं के बने हैं। मैदानों के बाद वाली टर्शियरी तथा क्वाटरनेरी शिलाओं ने ढक दिया है। एटलस की भांति यहां के पर्वतों में भी पटीकृत (फोल्डेड) पर्वत हैं। पर्वतीय श्रेणियां थोड़ी थोड़ी दूर का अंतर देकर फैली हैं। उनमें से कई वृत्ताकार तथा गुम्बदाकार हैं।

उत्तरी प्रदेश में (जो अल्जीरिया के तटीय वनों से मिला है) क्रोउमाइरी और मोगोद चट्टानें पाई जाती हैं। सब से अधिक नुमीडियन बलुहा पत्थर पाया जाता है। उत्तरी प्रदेश के दक्षिण मेदजर्दा घाटी है। यह घाटी सुकलवी मैदान (डकुला बेसिन) में पहुंच कर चौड़ी हो जाती है। इस मैदान की भूमि कछारी है। इस मैदान के आगे घाटी संकरी होकर कंदराएँ बनाती है उसके बाद फिर एक बड़ा मैदान बनाती है। यह मैदान बिज़र्टा मतेडर और ट्यूनिस के मध्य स्थित है।

मध्यवर्ती बड़ा प्रदेश लगभग १८० मील लम्बा और ६० मील चौड़ा है। यह तेबेसा से कैपबान तक और

मेदजर्दा से स्बीता तक फैला हुआ है। यहाँ अल्जीरिया के सहारा एतलस पर्वत का भाग भी आ जाता है। केफ और टेबूसरूक श्रेणियों के दक्षिण ट्यूनिस के मध्यवर्ती पठार मक्तार स्थित है। यह एक बड़ा क्रोटेसियस चट्टान का गुम्बद है। इस पठार की बग़लें ऊँची हैं। कला-एस-सेनान पठार ४१०८ फुट ऊँचा है। इसके बाद थाला पर्वतीय श्रेणी है। यह प्रधान ट्यूनीशियन पहाड़ी या ज़्यूगितान श्रेणी है। इसका आरम्भ जेबेल सेर्ज से होता है। इसमें बारगोयु या ज़गोवान ४२४६ फुट ऊँचा है यह गुम्बदाकार पठार चूने के पत्थर का बना है। इसके सिरे सीधे दीवार की भांति खड़े हैं। इसका अंत जेबेल रेसास और ब्येयु-कोसनि नामक पठारों से होता है। यह पठार ट्यूनिस की खाड़ी पर स्थित है इसी से मिली हुई एक पर्वतीय मोड़ कैपबान प्रायद्वीप बनाती है। इसी पहाड़ी श्रेणी से चम्बी और फेरिआना श्रेणियाँ भी मिली हुई हैं।

दक्षिणी प्रदेश में सिदी ऐच (गोफ्सा) की श्रेणी है इस श्रेणी में तेज़ाबी नमक बहुत पाया जाता है। पूर्वी ट्यूनिस में बड़े बड़े मैदान हैं (यह मैदान समुद्र तल से

१३ फुट से कम ऊँचे हैं)। यह मैदान ट्यूनिस के ८० प्रतिशत क्षेत्रफल में स्थित हैं। प्राचीन काल में इनका नाम बीज़ासेने था। सौस के साहेल और स्फाक्स के सुन्दर प्रदेश इसी में सम्मिलित हैं। इन प्रदेशों की जलवायु तथा वनस्पति बड़ी अनोखी है शाटस ग़ारसा, जेरिद और फेजेन समुद्रतल से नीचे हैं। इनके आगे मटमट्स और ग़ामास पर्वत हैं जो जेम्फारा के तटीय मैदान द्वारा समुद्र से अलग हो गये हैं।

जलवायु

ट्यूनिशिया के रेल प्रदेश का आधा भाग स्टेप का और आधा भाग टेल का है। ट्युनिस नगर का जनवरी मास का औसत ताप ५२'७° है। जनवरी मास का सबसे ऊँचा ताप ५६'७° और सबसे नीचा ताप ४५.६° है। सबसे गरम महीने का सबसे अधिक ताप ६२° और सबसे कम ताप ६६'४° है। शीत काल में उत्तरी-पश्चिमी और ग्रीष्म में उत्तरी-पूर्वी हवा चलती है। वर्षा ऋतु अक्तूबर से मई महीने तक रहती है। मई से सितम्बर मास तक सूखी ऋतु रहती है। जनवरी मास में सबसे अधिक वर्षा होती है। ट्यूनिशिया के भीतरी प्रदेश में वसंत कालीन वर्षा अधिक प्रभुत्व रखती है। वर्षा बराबर नहीं होती और किसी स्थान पर कम और कहीं अधिक होती है। हवा में थोड़ा परिवर्तन होने से वर्षा में अधिक परिवर्तन की सम्भावना हो जाती है। कोमीरे तथा मोगोदल प्रांत में लगभग २४ इंच वर्षा होती है। मध्य ट्यूनिशिया, मेदजर्दा घाटी, कैपबीन और ट्यूनिस नगर के आसपास १५ इंच से २० इंच तक वर्षा होती है। ट्यूनिशियन पहाड़ी श्रेणी के दक्षिण वाले प्रदेश में ११ इंच से १५ इंच तक वर्षा होती है। क्यूबेस में ७ इंच

गाफसा में ५ इंच और मेडीने में ४ इंच वर्षा होती है। ट्यूनिशिया पहाड़ी श्रेणी जलवायु सम्बन्धी सीमा बनाती है। इसके उत्तर पश्चिम का भाग टेल प्रदेश में शामिल है और उत्तरी पूर्वी प्रदेश स्टेप प्रदेश में शामिल है। साहेल में जैतून के वृक्ष अधिक पैदा होते हैं। यद्यपि इस प्रदेश में वर्षा कम होती है फिर भी समुद्र के समीप होने के कारण यहां ओस अधिक पड़ती है।

ट्यूनिशिया की मुख्य नदी मेदजर्दा है। यह नदी अल्जीरिया में सक-अहरस के समीप से निकलती है और पार्टो फरीना के समीप भूमध्य सागर में जा गिरती है। यह नदी २२८ मील लम्बी है। इस नदी की मुख्य सहायक नदी मेलेग्वे है। मेलेग्वे नदी पोर्टो फरीना से सुकल-अरब के मैदान में जा मिलती है। मध्य ट्यूनिस का जल सिलियाना नदी द्वारा आता है। मेदजर्दा नदी में बड़े बड़े कछारी मैदान हैं। इस नदी ने उतीफा की प्राचीन खाड़ी को भर दिया है। पूर्वी ढाल की नदियाँ वाद ,जेरौद और वाद मेरेग्वेलेल हैं। यह नदी अधिक वर्षा होने पर ही समुद्र तक पहुंचती है नहीं तो सूखकर निचले प्रदेश के बेसिन में समाप्त हो जाती है।

उत्तरी तट पर सी० नेग्रे, सी० सेरात, सी ब्लांक रास सिदी, अलीउल मेकी नदियां हैं। बिज़र्ता झील अधिक गहरी है। ट्यूनिस की झील उथली है।

कैपबीन प्रायद्वीप के आगे ट्यूनिस की खाड़ी की पूर्वी सीमा आ जाती है। पूर्वी तट निचला और बलुहा है। इसके किनारे किनारे अनेकों अनूप हैं। केरकेनाह द्वीप समूह और गेर्बा द्वीप के चारों ओर उथला समुद्र है।

खनिज सम्पति

ट्यूनिशिया में तेज़ाबी नमक बहुत है। गाफ्सा प्रदेश में मेत लाओवी, ऐन, मौलारेस, रेडे एफ में तेज़ाबी नमक बहुत निकाला जाता है। गाफ्सा प्रदेश से दो रेलवे लाइनें स्फाक्स और सूसा को जाती हैं। मेहेरी जेब्यूस और ग्वायला की खानों को खोदने की योजना हो रही है। कलाएस सेनान और कला जेर्दा का ट्यूनिशिया का तेज़ाबी नमक ट्यूनिस से बाहर भेजा जाता है। ७ करोड़ मन तेज़ाबी नमक निकाला जाता है। समस्त

संसार में २२ करोड़ ४० लाख मन तेज़ाबी नमक निक-
लता है। इसी से ट्यूनिशिया के तेज़ाबी नमक की उप-
योगिता का पता चल सकता है। केफ के दक्षिण और
अल्जीरिया की सीमा के समीप जेबेल्स म्लटा, डजेरीसा,
हमीमा, केफ के उत्तर नेब्यूर और नेफ्जास में उत्तम श्रेणी
का लोहा निकाला जाता है। १,४०,००,००० मन
लोहा निकलता है। इस प्रकार यह देश खनिज सम्पत्ति
में एक विशेष स्थान रखता है।

ट्यूनिशिया में ३,३६,००० मन जस्ता और
१७,२०,००० मन सीसा खांग्वेट-केफ-टोट, जगोवान और
जेबेल रेसास से आता है। कैपबान में कुछ मध्यम श्रेणी
का कोयला पाया जाता है। स्लौगोनिया और मेडजेज़ल
बाब में पेट्रोल पाया जाता है। खनिज पदार्थ कच्ची दशा
में बाहर भेजा जाता है। आटा पीसने, तेल साफ करने
और शराब बनाने का काम कई स्थानों में होता है। यहां
खनिज पदार्थ मिले हुये गरम सोते भी बहुत हैं।

ट्यूनिस-दर्शन

आने जाने के मार्ग

ट्यूनिशिया में ३४४४ मील सड़कें और १२९७ मील रेलवे लाइन है। मेदजर्दा से आरम्भ होने वाली रेलवे लाइन मध्यवर्ती उत्तरी अफ्रीका की ट्रँक (शाखा) लाइन है। यह अल्जीरिया को ट्यूनिशिया से मिलाती है। इसकी दो शाखा लाइनें बिजेर्टा की ओर जाती हैं। यह दोनों लाइनें मेट्यूर स्थान पर फिर मिल जाती हैं। मेट्यूर से एक लाइन तबारका को जाती है। दक्षिण की ओर एक लाइन नेब्यूर को जाती है। ट्यूनिस से एक रेलवे लाइन पूर्वी तट के समानान्तर चलती है और सूसा, स्फाज़ और गेब्स होती हुई जाती है। तीन लाइनें ट्यूनिशिया के भीतरी प्रदेश को समुद्र से मिलाती हैं और वे इस तटीय लाइन से मिल जाती हैं। ट्यूनिस-कला-एस सेनान, सूसा-हेनागिर-सोवातिर, स्फाक्स-गाफसा आदि दूसरी रेलवे लाइनें हैं। इन से टोज़्यूर और थेटलओनी को शाखा लाइनें जाती हैं। ६ अप्रैल सन् १९०२ ई० के क़ानून के अनुसार ट्यूनिस को अपने यहाँ की रेलवे लाइनों पर अधिकार

प्राप्त हुआ। रेलवे लाइनों का प्रबंध दो कम्पनियां करती हैं। यह ट्यूनिस की रेलवे तथा स्फाक्स गाफ्सा कम्पनी हैं।

बिजेर्टा, ट्यूनिस, सूसा और स्फाक्स के चारों बन्दरगाह अच्छी तरह सुसज्जित हैं। दूसरे बन्दरगाह कम ज़रूरी हैं। ३६ लाख टन में से ट्यूनिस में १७ लाख टन, स्फाक्स में १३ लाख, सूसा में ३ लाख ६० हज़ार और बिजर्टा में २ लाख ५० हज़ार टन सामान उतारा जाता है। फ्रांसीसी गोदाम ६ लाख टन का है।

व्यापार

कुछ सामानों और खासकर अनाज के लिये ट्यूनिशिया, फ्रांस और अलजीरिया एक ही संघ (यूनियन) के अधिकार में हैं। शराब आदि कुछ वस्तुएँ बिना चुंगी के नगरों में जा सकती हैं। ट्यूनि-शिया में फ्रांसीसी सामान को अधिक सुविधा प्रदान की जाती है। १६२७ ई० में ट्यूनिस का व्यापार २,७६,८०,००,००० फ्रैंक का हुआ। इसमें १,७७,२०,-

००,००० का आयात और १,०२,६०,००,००० का निर्यात हुआ था। इसमें फ्रांस के साथ १,३७,८०, ००,-००० का अल्जीरिया के साथ २१,५०,००,००० का और इंगलैण्ड के साथ १२,२०,००,००० फ्रैंक का व्यापार हुआ था। इंगलैण्ड से ५ करोड़ १० लाख फ्रैंक का सूती कपड़ा और कोयला आया था और ६ करोड़ १० लाख का सामान इंगलैण्ड भेजा गया था जिसमें अल्फा, तेज़ाबी नमक और लोहा शामिल था। इटली के साथ३६,००,००,००० का व्यापार हुआ था।

ट्यूनिस में कारखाने की बनी वस्तुएँ और उपनिवेशों की पैदा हुई वस्तुएँ आती हैं जिनमें चीनी, चाय, क़हवा, कल-पुर्ज़े, कोयला और पेट्रोल भी शामिल हैं। ट्यूनिशिया से अनाज, ज़ैतून का तेल, भेड़, शराब, अल्फा घास, मछली, तेजाबी नमक, लोहा, सीसा, जस्ता और जई आदि सामान बाहर जाता है।

१९३६ ई० में ट्यूनिशिया से १,०१,३६,०८,००० फ्रैंक का सामान बाहर से मंगाया गया और ८४,६६,-४४,००० फ्रैंक (फ्रैंक फ्रांसीसी चांदी का सिक्का है।

यह १० पेंस के बराबर होता है) का सामान बाहर भेजा गया।

नगर

ट्यूनिस मुख्य नगर है। ट्यूनिस नगर एक अनूप पर स्थित है। फ्रांसीसी लोगों ने यहां से समुद्र के लिये एक जहाज़ी नहर निकाल दी। इससे समुद्री जहाज़ यहां बराबर आ जा सकते हैं। नगर से कुछ मील की दूरी पर उत्तर पश्चिम की ओर प्राचीन कार्थेज के भग्नावशेष हैं। इसकी जनसंख्या लगभग २ लाख २० हज़ार है। इसमें लगभग एक लाख योरुपीय लोग और शेष ट्यूनिस के निवासी हैं। पास-पड़ोस की बस्ती को मिला कर ट्यूनिस की जन-संख्या लगभग २५ हज़ार बढ़ जाती है। स्फाक्स दक्षिण की राजधानी है। इस नगर के चारों ओर दीवार बनी है। दीवार के भीतर की जनसंख्या लगभग ४२ हज़ार है। नगर के समीपवर्ती स्थानों की जनसंख्या लगभग ५० हज़ार है। सूसा नगर की जनसंख्या २२ हज़ार है। बिजर्टा की २६ हज़ार

जिसमें लगभग ७ हज़ार योरुपीय हैं। यहां फ्रांसीसी लोगों ने बन्दरगाह की रक्षा के लिये मज़बूत किले बन्दी की है। फेरीविली के अस्त्र-शस्त्र वाले कारखाने में ५ हज़ार योरुपीय रहते हैं। कीरवान की जनसंख्या २० हज़ार है। बेजा की जनसंख्या ११ हज़ार है। नगरों के अतिरिक्त बड़े बड़े कृषक गाँव हैं। म्साकेन की जन-संख्या १७ हज़ार मोकनाइन की १३ हज़ार और कला केबीरा की १२ हज़ार है। दक्षिणी ओसिस वाले नगर भी हैं। इनमें कावेस की जनसंख्या १६ हज़ार, मफता की १३ हज़ार, टोज्यूर की ११ हज़ार नारज़िस की ६ हज़ार, एलहम्मा की ४ हज़ार और गेर्बा नगर की ५ हज़ार है।

ट्यूनिस

ट्यूनिशिया देश की राजधानी है। यह नगर एक पर्वतीय स्थल संयोजक पर स्थित है। यह पर्वतीय स्थल संयोजक सेब्का सेदजूमी को ट्यूनिस की झील या सागर से अलग करता है। यह नगर उसी झील के

पश्चिमी तट पर स्थित है। नगर के उत्तर-पूर्व की ओर ट्यूनिस समुद्र से मिला है। ट्यूनिस नगर को वे ही सुविधायें प्राप्त हैं जो कार्थेज नगर को प्राप्त थीं।
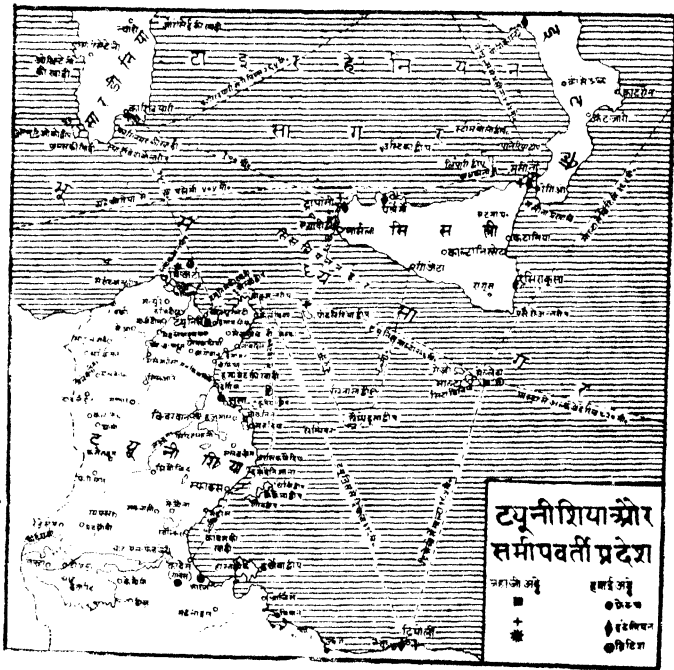
एक छिछले अनूप के तट पर स्थित होने के कारण इसे अपने समुद्री व्यापार के लिये लागौलेटे नामक मध्यवर्ती

नगर का प्रयोग करना पड़ा है। ट्यूनिस नगर ईसाई आक्रमणों से सुरक्षित रहा है।

ट्यूनिस नगर दो नगरों से मिलकर बना है। यह दोनों नगर एक दूसरे से मिले हुये हैं। प्राचीन नगर बीरन्कासा और रास-ताबिया के मध्य बुहीरा पर नीचे की ओर ढाल पर स्थित है। नवीन योरुपीय ट्यूनिस नगर चपटी नीची भूमि पर प्राचीन ट्यूनिस नगर और ट्यूनिस झील के मध्य स्थित है।

योरुपीय ट्यूनिस नगर के भवन ऊँचे तथा सुन्दर हैं और भवनों की पंक्तियों के मध्य सड़कें हैं। इन सड़कों के एवीन्यू जूलेफेरी, एवीन्यू डे ला मारिने और एवीन्यू डी फ्रांस नाम है। यहीं पर रेजीडेन्सी भवन है। रेजीडेन्सी के चारों ओर वाटिकायें, मठ, केसिनो थियेटर, समुद्री घाट, प्रधान होटल और काफी घर हैं। इसके मध्य भाग पर समकोण बनाती हुई एक सुन्दर सड़क है जिसे एवीन्यू डी कार्थेज कहते हैं। इसके उत्तरी भाग की ओर एवीन्यू डी पेरिस सड़क है जो उत्तर से दक्षिण लगभग दो मील लम्बी चली गई है। इन दोनों सड़कों से कई छोटी छोटी सड़कें निकलती हैं जिनमें मुख्य एस-

सदिकिया है जिसका अंत रेलवे स्टेशन पर होता है। रोम तथा इटली सड़कों पर डाकखाना, बाज़ार और प्रोटेस्टेंट गिरजाघर है। एवीन्यू डी फ्रांस नामक सड़क ट्यूनिस नगर की केन्द्रवर्ती सड़क है। इस सड़क का अंत लापोर्ट डी फ्रांस पर होता है जहां से ट्रामवे का आरम्भ होता है। ट्रामवे प्राचीन नगर के चारों ओर घूम कर जाती है। ट्रामवे मार्ग पर डी लाबोर्स नामक स्थान है जहां ब्रिटिश कौंसलेट और प्राचीन फ्रैंक क्वाटर हैं। यहीं योरुपीय तथा दूसरे देशों के प्रतिनिधि निवास करते हैं।

प्राचीन नगर के तीन भाग हैं। मदीना नगर का मध्यवर्ती भाग है। यह नगर का प्राचीन भाग है और यहां अब भी बहुत से द्वार हैं। बाब सोविका स्थान उत्तर की ओर है वहीं यहूदी लोग रहते हैं। बाबडजाज़िरा स्थान दक्षिण की ओर है। वहीं यहूदी लोग रहते हैं। जामा जितौना या ज़ैतून वृक्षों की मस्जिद में मुसलमानी विश्व विद्यालय है। यह विश्व विद्यालय ७३२ में स्थापित किया गया था। इसकी नींव उमय्यद गवरनर ओवैद उल्लाह ने डाली थी। यहां के अधिकांश भवन तेरहवीं से पन्द्रहवीं सदी के मध्य के बने हैं। जितौना के

पीछे नगर का वह प्राचीन भाग है जहां घर तथा गलियां बहुत संकरी हैं। गलियां ऐसी छतों या तख्तों से पटी हैं कि उनमें लोग केवल पैदल चल सकते हैं। यहाँ प्रत्येक भाँति के व्यापारियों के रहने के स्थान अलग अलग हैं। ट्यूनिस में बहुत सी मस्जिदें हैं जिनमें कास्बा (तेरहवीं सदी) आदि प्रसिद्ध हैं। इन मसजिदों में ईसाई लोग नहीं प्रवेश कर सकते हैं।

ट्यूनिस का- बन्दरगाह १८९३ ई० में बनाया गया था। बन्दरगाह बनाने के लिये ६ मील लम्बी और ३० फुट गहरी एक खाड़ी खोदनी पड़ी थी। अब इसी बन्दरगाह पर २७ लाख टन तक सामान जहाज़ों द्वारा सालाना आता जाता है और १ लाख १० हज़ार पैसेंजर प्रतिवर्ष जहाज़ों पर चढ़ते उतरते हैं।

ट्यूनिस की जन-संख्या लगभग दो लाख है जिसमें लगभग ८२ हज़ार मुसलमान, २५ हज़ार यहूदी, ८० हज़ार योरुपीय, २७ हज़ार फ्राँसीसी, ४४ हज़ार इटैलियन और ५ हज़ार माल्टीज़ हैं। समीपवर्ती प्रदेश की जन-संख्या जोड़ने पर लगभग सवा दो लाख हो जाती है।

नगर के दक्षिण-पूर्व मिलान घाटी पर सैकड़ों बड़े

बड़े पत्थरों के महराब हैं। यह रोमन काल के बने हैं। जागवान स्थान पर जल मन्दिर के खँडहर हैं।

ट्यूनिस नगर कार्थेज काल में भी था परन्तु मुसलमानी काल से यह प्रसिद्ध हुआ है। मुसलमानों के आने पर कार्थेज के स्थान पर ट्यूनिस नगर ही व्यापारिक तथा राजनैतिक केन्द्र बन गया। नवीं सदी के अंत में यह राजधानी बना दिया गया। अगलाबाइड और हफसाइड लोगों के समय में इसकी बड़ी उन्नति हुई और इसका महत्व मिस्र के केरो (काहरा) नगर से भी अधिक हो गया था। १२७० ई० में सेंट लूई ने इस पर आक्रमण किया उसकी मृत्यु के बाद खैरउद्दीन बार बेरौसी ने इस नगर पर १५३३ में अधिकार जमाया। १५३५ ई० में चार्ल्स पञ्चम ने नगर पर अधिकार किया। १५६९ ई० में स्पेनी लोग नगर से भगा दिये गये परन्तु १५७३ ई० में उन्होंने फिर अधिकार कर लिया उसके बाद १५७४ ई० में उन्होंने नगर को तुर्कों के हाथ सौंप दिया।

संक्षिप्त इतिहास

ट्यूनिशिया का इतिहास उस समय से आरम्भ होता है जब से इस देश पर फ़ीनोशियन जाति का अधिकार हुआ। म्युनिक लोगों का प्रभाव तटीय बस्ती पर पड़ा पर भीतर की बर्बर जाति पर किसी प्रकार का भी प्रभाव नहीं पड़ा। जब रोमन जाति का अधिकार हुआ तो लैटिन संस्कृति का प्रचार फैला। अफ्रीका के उत्तरी भाग को बर्बर लोग "इफ्रीका या इफ्रीजिया" कहा करते थे। उसी नाम के रोमन लोगों ने लैटिन भाषा में बदल कर अफ्रीका बना दिया। धीरे धीरे अफ्रीका शब्द समस्त महाद्वीप के लिये प्रयोग होने लगा।

अफ्रीका प्रान्त रोमन काल में बड़ा उपजाऊ था। यहां गल्लेबानी खूब होती थी, तेल भी निकाला जाता था और मछली का शिकार भी खूब होता था, भाँति भांति की खनिज सम्पत्ति भी पाई जाती थी। अफ्रीका प्रान्त का ट्यूनिशिया सब से अधिक आवश्यक भाग था। रोमन कालीन चिन्ह इस बात की साक्षी देते हैं। लैटिन क्रिश्चियन समय में ट्यूनिशियन का नाम टेरटूल्लियन और साइप्रियन था। रोमन लोगों के बाद वंडाल के लोगों का राज्य हुआ। वंडाल जाति ने ४३६ ई०

में कार्थेज नगर पर अधिकार जमाया। ६४८ ई० में अरब जाति का आक्रमण हुआ। विजयी उक़बा-बीन-नाफा ने ६७३ ई० में खैरवान नगर की नींव डाली। खैरवान नगर "इफ्रीकियाह" के गवरनरों का ओमय्यद राजों के समय में निवास स्थान था। उसके बाद सिसली के विजयी अगलाबाइर राजाओं की भी यह राजधानी रही।

अरब और बर्बर जातियां

१०० वर्ष के भीतर ही लैटिन भाषा और ईसाई धर्म दोनों का प्रभाव थोड़े समय के बाद ही जाता रहा। बर्बर जाति ने अरब लोगों के आने पर मुसलमानी धर्म स्वीकार कर लिया पर उन्होंने अपनी संस्कृति नहीं छोड़ी। वह अपने जीवित तथा मृतक साधुओं की पूजा करते रहे और अपनी राष्ट्रीयता का परिचय देते रहे। फातिमाइट साम्राज्य बर्बर सहायता ही पर निर्भर था। उसके बाद से तुर्क लोगों के पहुँचने के समय तक ट्यूनिशिया के शासक ट्यूनिस निवासी रहे।

जब फातिमा साम्राज्य की राजधानी मिस्र को हटाई

गई तो जिराइत लोग जो सनहाजा बर्बर जाति के थे महदिया में शासन करते रहे। जब शिया लोगों के विरुद्ध जिराइत राजा खलीफा को मानने लगे तो १०४५ ई० में फातिमा लोगों ने उत्तरी अफ्रीका पर आक्रमण किया। उनके आक्रमण से बर्बर जाति के लोग पहाड़ी प्रदेश की ओर हट गये और वहीं रह कर उस समय तक उन्नति करते रहे जब तक फ्रान्सीसी साम्राज्य की स्थापना नहीं हुई। फातिमा लोग अपना साम्राज्य करने में सफल नहीं हुये। सिसली के रोगर प्रथम ने ११४८ ई० में आक्रमण किया और महदिया पर अधिकार जमा लिया उसके आक्रमण से जिराइत वंश का अंत हो गया। रोगर प्रथम ने ट्यूनिशिया तट पर अपना शासन स्थापित कर दिया। ११६० ई० में अल्मोहेद खलीफा अब्दुल मूमिन ने आक्रमण किया और महदिया पर अधिकार करके रोगर के राज्य का नाश कर दिया।

उसके पश्चात् अल्मोहेद साम्राज्य की अवनति होने लगी। १३३६ ई० में ट्यूनिशिया के राजकुमार अबू-जकरिया ने अपने स्वतंत्रता की घोषणा की और राज घराने की स्थापना की जो तुर्कों के समय तक चलता

रहा। अबूजकरिया अबू हफस नामक बेरबेर सरदार के वंश का था। अबूहफस अल्मोहेद महदी का प्रिय शिष्य था। इसी कारण अबू जकरिया के राज घराने का नाम भी हफ्साइट पड़ा। मास्तान्सिर हफसाइट राजा के समय में हफ्साइट राज्य की अच्छी उन्नति हुई और त्लेम्सेन से त्रिपौली तक फैल गया था। हफ्साइट राजा को फेज़ मिरिनिड राजा से कर मिलता था। योरुपीय सेनाओं का भी मेस्तान्सिर ने सामना किया था। हफसाइट राजाओं ने टयूनिस में मस्जिदें स्कूल और दूसरी संस्थाएँ स्थापित कीं। यह राजा विद्या का आदर करते थे। उनके समय में टयूनिस की अच्छी उन्नति हुई परन्तु आपसी झगड़े के कारण राज्य का अंत हो गया। १५२५ ई० में मोहम्मद हफसाइट के मृत्यु पर राजगद्दी के लिये झगड़ा खड़ा हो गया और कुस्तुन्तुनिया के सम्राट के नाम पर खैर उद्दीन बरबरोसा ने टयूनिस नगर पर अधिकार कर लिया।

मोहम्मद के पुत्र अलहसन ने स्पेन के सम्राट से सहायता मांगी और स्पेन की सहायता से १५३५ ई० में वह ट्यूनिशिया का राजा बना दिया गया। स्पेनी लोग

गोलेटा में रह गये और उन्होंने वहां एक मज़बूत गढ़ बनाया। उन्होंने जबी के द्वीप तथा दक्षिणी-पूर्वी तट के कुछ स्थानों पर अधिकार जमा लिया। भीतरी प्रदेश में अशान्ति बनी रही और आपस में लोग लड़ते झगड़ते रहे। १५७० ई० में अल्जियर्स के अली पाशा ने अल हसन के पुत्र हमीद को हराया और ट्यूनिस पर अधिकार कर लिया। १५७३ ई० में डान जुआन के आने पर तुर्क लोग कुछ हटे परन्तु दूसरे ही वर्ष सुल्तान सलीम द्वितीय ने एक बड़ी तुर्क सेना भेजी जिसने स्पेनी लोगों को ट्यूनिश और गोलेटा से निकाल बाहर किया और ट्यूनिशिया को तुर्क साम्राज्य का एक प्रान्त बना लिया फिर भी ट्यूनिश के तटीय भाग पर स्पेनी भाषा तथा संस्कृति का प्रभाव शेष रह गया।

तुर्की विजय के बाद ट्यूनिशिया का शासन एक पाशा के हाथ सौंप दिया गया परन्तु सैनिक क्रान्ति हुई जिसके फल स्वरूप डे ट्यूनिशिया का सबसे बड़ा हाकिम बनाया गया। १७०५ ई० तक डे सरकार चलती रही उसके बाद बे लोगों का समय आया। यह लोग जातियों का प्रबन्ध तथा संगठन करते और कर वसूल करते थे। हसनबी

अली प्रथम बे शासक था। यह राज्य घराना अब तक चला आता है।

ट्यूनिशिया के डे तथा बे राजाओं के समय में अल्जीयर्स के शासकों से युद्ध तथा संधियां होती रहीं। सचमुच ही वह समय ऐसा था कि ट्यूनिश पर निःसंदेह ही समुद्री डाकुओं का राज्य था। ट्यूनिश नगर की आय मुख्यतः समुद्री डाकुओं पर ही निर्भर थी। ट्यूनिशिया के शासक इँगलैंड और फ्रान्स के मध्य जो व्यापारिक युद्ध हुये उनसे अच्छा लाभ उठाते रहे। योरुपीय राष्ट्र संधि का प्रयत्न करते रहे। १८१६ ई० में योरुपीय राष्ट्रों ने एलाशपल की संधि में फिर बे के पास प्रार्थना पत्र भेजा कि समुद्री डाकुओं का कार्य बन्द किया जावेगा। समुद्री डाकुओं पर रोक लग जाने से समस्त देश में अशांति फैल गई। भांति भांति के कर लगाये गये फिर भी सरकार की आर्थिक स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं हुआ। क्राइमिया के युद्ध के बाद ट्यूनिशिया में तुर्की रिजेन्सी की पुनः स्थापना हुई। फ्रैंको-जर्मन युद्ध के पश्चात् ट्यूनिश के बे लोग इँगलैंड से सलाह लेने लगे।

ट्यूनिस-दर्शन

१८५५-७६ ई० तक ट्यूनिश के दरबार में इँगलैंड के राजदूत सर रिचर्ड उड ट्यूनिश में रहे।

रेलवे, प्रकाश घर, गैस, वाटर वर्क्स और दूसरे कारखाने ब्रिटेन के हाथ में कर दिये गये। १८७८ ई० में बर्लिन में एक कांग्रेस हुई। इँगलैंड ने फ्रान्स को ट्यूनिशिया में स्वतंत्रता पूर्वक काम करने के लिये कहा और साइप्रस द्वीप को अँग्रेजों ने फ्रांसीसियों से पट्टे पर ले लिया।

१८६१ ई० के पश्चात् इटली ने ट्यूनिशिया के भविष्य की ओर अपना ध्यान बटाया। १८६६ ई० में जब ट्यूनिशिया का दिवालिया हो गया तो ट्यूनिशिया के कोष पर इँगलैंड, फ्राँस और इटली ने अधिकार कर लिया। १८८० ई० में इटली ने ट्यूनिश से गोलेटा तक की रेलवे लाइन इँगलैंड से मोल ले ली इससे फ्रांस को कुछ प्रसन्नता हुई। १८८१ ई० में एक फ्रांसीसी सेना ने अलजीरिया की सीमा को पार किया और कमीर या कौमीर जाति को दबाने के बहाने ट्यूनिश की ओर बढ़ी और बे को फ्रांसीसी छत्रछाया में रहने पर विवश कर दिया। उसके बाद प्रत्येक प्रसिद्ध तथा आवश्यक

स्थान पर फ्रांसीसी सेना का पहरा खड़ा कर दिया गया।

फ्रांस की छत्रछाया की स्वीकृति करते हुये मोहम्मद चतुर्थ बे ने फ्राँसीसियों के साथ संधि की। यह संधि बारदो महल में १२ मई सन् १८८१ ई० को हुई थी। अक्तूबर १८८२ ई० में उसकी मृत्यु हो गई। उसके भाई तथा उत्तराधिकारी अली चतुर्थ ने ८ जून १८८३ ई० को ला मार्सा स्थान पर दूसरी सन्धि फ्रांसीसियों के साथ की। फ्रांस ने ट्यूनिस में अपना रेज़ीडेंट जनरल तथा परराष्ट्र मन्त्री भी नियुक्त कर दिया। १८८४ ई० के उपरान्त फ्रांस ने ट्यूनिशिया के शासन में बहुत से सुधार किये। देशी सरकार बनी रही परन्तु मन्त्रिमंडल में फ्रांसीसियों की संख्या अधिक रही। ट्यूनिस की आर्थिक उन्नति फ्रांसीसियों ने की, समस्त देश में शांति स्थापित की, देशी रीति रिवाजों और नियमों का आदर किया। फ्रांस की छत्र छाया को ग्रेट ब्रिटेन ने पहले और फिर दूसरे राष्ट्रों ने भी स्वीकार कर लिया। टर्की ने फ्रांस की छत्र छाया नहीं स्वीकार की। १६२० ई० में सेबरेस की सन्धि होने पर टर्की ने ट्यूनिशिया से अपने

समस्त अधिकार को छोड़ने की घोषणा की। फ्रांसीसी छत्रछाया का इटली पर गहरा प्रभाव पड़ा। इटली ट्यूनिशिया पर स्वयम् अपनी छत्रछाया स्थापित करना चाहता था। ट्यूनिशिया में योरुपीय लोगों में इटेलियनों की छत्रछाया की बस्ती सब से अधिक थी। १८९६ ई० में इटली ने फ्रांस की छत्रछाया स्वीकार की। ट्यूनिशिया के इटेलियन लोगों को भी अपनी राष्ट्रीयता बनाये रखने का अधिकार फ्रांसीसी सरकार ने दे दिया। ब्रिटिश प्रजा को भी अपनी राष्ट्रीयता रखने का अधिकार मिल गया। उस समय माल्टा के बहुत से लोग ट्यूनिस में जा बसे थे। इटेलियन और ब्रिटिश प्रजा की राष्ट्रीयता के प्रश्न पर फ्रांसीसी सरकार ने १९२१ ई० में घोषणा की कि वह इटैलियन तथा ब्रिटिश प्रजा जिनके माता-पिता ट्यूनिशिया में ही जन्म लिये हैं उन्हें फ्रांसीसी राष्ट्रीयता माननी होगी। इस घोषणा से इटैलियन तथा ब्रिटिश प्रजा में बड़ा असन्तोश फैल गया। १९२३ ई० में ब्रिटिश के साथ समझौता हो गया कि जिन ब्रिटिश प्रजा पर यह नियम लागू है वह फ्रांसीसी राष्ट्रीयता स्वीकार करने से इनकार कर सकते हैं परन्तु इटेलियन सरकार से

१९२६ ई० तक किसी प्रकार का भी समझौता नहीं हो सका। १९४० में फ्रांस के पतन के बाद यहां इटली का प्रभुत्व बढ़ने लगा।

ट्यूनिशिया के दक्षिणी प्रदेश की घूमने वाली खानाबदोश जाति ने कई बार झगड़े उत्पन्न किये पर वह सदैव फ्रांसीसी शासन की भक्त बनी रही। गत महायुद्ध के समय फेज़ान के निवासियों ने तुर्की अफसरों की देख भाल में दक्षिणी ट्यूनिशिया के फ्रांसीसी स्थानों पर हमला किया। १९१५ ई० के सितम्बर और अक्तूबर मास में कुछ लड़ाइयां हुईं उसके बाद फ्रांस का शासन फिर स्थापित हो गया। उसके बाद ट्यूनिस के बहुत से सैनिक फ्रांस चले गये।

१९१९-२० ई० में फ्रांस तथा इटली के साथ एक समझौता हुआ जिसके अनुसार ट्यूनिस के दक्षिण का प्रदेश जो गाडामेस और घाट तथा घाट और टुम्मो के ओसिसों के मध्य है वह इटली को दे दिया।

उत्तरी ट्यूनिशिया जहां कृषि तथा कारबार की उन्नति हुई। शिक्षित ट्यूनिशियन निवासियों ने कुछ अधिक राजनैतिक अधिकार प्राप्त करने के लिये

आन्दोलन किया। १६२२ ई० में ट्यूनिशियन निवासियों की मांग की पूर्ति करने के लिये प्रोटेक्टरेट के लिये एक सभा बनाई गई जिसमें ४४ फ्रांसीसी और १८ ट्यूनिशियन सदस्य सरकार द्वारा नियुक्त किये गये। इसके अतिरिक्त प्रत्येक प्रदेश तथा ज़िले में भी सभाएँ स्थापित की गईं। उसके बाद १६२४ और १६२५ ई० में राष्ट्रीय आन्दोलन हुये इन राष्ट्रीय आन्दोलनों में कम्यूनिस्ट आन्दोलन भी मिल गया क्योंकि उस समय वस्तुओं का मूल्य १६२४ ई० की अपेक्षा चार गुना बढ़ गया था। ट्यूनिशिया के शिक्षक निवासी प्रजातांत्रिक सरकार की मांग कर रहे थे। इसलिये १६२५ ई० में म्यूनिसिपैलिटी की कौंसिलों को और अधिक अधिकार प्रदान किये गये। इस समय ट्यूनिशिया देश मित्र राष्ट्रों और धुरी राज्यों का युद्ध-स्थल बन रहा है।

शासन

१२ मई सन् १८८१ ई० की बार्दो सन्धि के अनुसार ट्यूनिशिया फ्रांसीसी छत्रछाया में आया और इसी संधि तथा ८ जून सन् १८८३ ई० की सन्धि में ट्यूनिशिया के अधिकारों का वर्णन किया गया। ट्यूनिश के सरदार के साथ ही साथ फ्रांस का रेज़ीडेण्ट जनरल बैठता है और समस्त शासन प्रबन्ध का निरीक्षण करता है। सेना, शिक्षा, कोष, पब्लिक कार्य और कृषि विभागों के सञ्चालक फ्रांसीसी लोग हैं। देशी मंत्री फ्रांसीसी निरीक्षण में राज्य के मंत्री तथा न्याय मंत्री का काम करते हैं। ट्यूनिशिया की बड़ी कौंसिल अनुमानित आय व्यय (बजट) की देख भाल करती है। यह कौंसिल ११ जुलाई १९२२ ई० की घोषणा के अनुसार बनाई गई है। इसमें कुछ फ्रांसीसी तथा कुछ देशी निर्वाचित सदस्य हैं। इसके अतिरिक्त बिज़र्ती, केफ, ट्यूनिस, सूसा और स्फाक्स में भी कौंसिल है। इनके अतिरिक्त केडेट कौंसिलें भी हैं। अधिक प्रसिद्ध नगरों में म्यूनिसिपलिटियां स्थापित की गई हैं। देशी शासन प्रजा को केडट और शेखों में बांट कर किया जाता है। जिस

प्रकार बे के ऊपर रेज़ीडेंट निरीक्षण करता है उसी प्रकार बे के अफ़सरों के ऊपर कंट्रोलर सिविल नामक फ़्रांसीसी अफ़सर रहते हैं।

ट्यूनिशिया १६ कंट्रोल सिविल और ३७ कैडाटों में विभाजित है। दक्षिणी भाग का शासन देशी कार्यों के अफसर द्वारा होता है। ज़ैतून, खजूर, अनाज, अंगूर और पशुओं पर कर लगता है। चुङ्गी, डाकखाना, सरकारी दफ्तर आदि से भी सरकार को आय होती है। यहाँ का अनुमानित आय-व्यय (बजट) २८ करोड़ फ़्रैंक है। ट्यूनिस और सूसा दो स्थानों में न्यायालय हैं। इन अदालतों की अपील अल्जियर्स की अदालत में होती है। इनके अतिरिक्त १५ और दूसरी छोटी कचहरियाँ हैं। देशी निवासियों के मामलों का फैसला काजी लोग करते हैं परन्तु जिन मामलों में योरुपीय लोग भी शामिल रहते हैं वह सरकारी न्यायालयों में भेजे जाते हैं।

ट्यूनिशिया का शासक सिदी अहमद बे और रेज़ीडेंट जनरल एम० लाबोन है।

कृषि

ट्यूनिशिया में "मेल्क" नाम की धरती पर किसी प्रकार का कर नहीं लगया जाता है। "हबोय" धरती पर किसान का उसी प्रकार अधिकार समझा जाता है जिस प्रकार भारतवर्ष में काश्तकारी है परन्तु "हबोय" धरती अधिक समय के लिये उधार-पट्टा पर लिखी जा सकती है।

ट्यूनिशिया की २८,५६,००० हेक्टर भूमि खेती के योग्य है। १,३७१,००० हेक्टर में नाज की उपज होती है। साधारण रूप से उपज कम होती है। गेहूँ, जौ, जई, मक्का, मटर, आलू और दूसरे भाँति के अनाजों की उपज होती है। योरुप के निवासियों ने आकर अंगूर लगा दिये हैं। २८ हज़ार हेक्टर भूमि में अंगूर की खेती होतो है। अंगूरी धरती में १५००० हेक्टर भूमि इटैलियन लोगों के अधिकार में है। ट्यूनिस, सू-केल ग्रोम्बालिया-अरब में अंगूर की अच्छी खेती होती है। अंगूर की खेती २८,००० हेक्टर भूमि में की जाती है। ट्यूनिशिया के पूर्वी भाग में ज़ैतून की अच्छी उपज

हो सकती है। कैप बानअन में १ करोड़ ६० लाख वृत्त सूसा में ३० लाख और स्फाक्स में २० लाख ज़ैतून के वृत्त हैं। फ्रांसीसी उपनिवेश होने के कारण स्फाक्स प्रदेश में बहुत अधिक ज़ैतून की उपज होने लगी है। गेबी में ४ लाख और जाजिस में ५ लाख ज़ैतून के वृत्त हैं। कैप बान के प्रदेश में नारंगी की उपज होती है। ओसिसों (मरु द्वीपों या नखलिस्तानों) में खजूर की अच्छी पैदावार होती है।

नोट—एक हेक्टर लगभग ढाई एकड़ के बराबर होता है।

पालतू पशु तथा प्राकृतिक उपज

ट्यूनिशिया में पालतू जानवरों के पालने तथा प्राकृतिक वस्तुओं की उपज बढ़ाने का बड़ा प्रयत्न किया जा रहा है। ट्यूनिशिया में २ लाख ५० हज़ार बैल, ८० हज़ार घोड़े, ३० हज़ार खच्चर, १ लाख ६७ हज़ार गधे; १ लाख ऊँट, १५ हज़ार सुअर, १५ लाख भेड़ और १० लाख बकरियाँ हैं। प्रति वर्ष ट्यूनिया से ५० हज़ार भेड़े और ८४०० मन ऊन बाहर भेजा जाता है

बनों से १६ हज़ार मन सामान मिलता है। काग़ज़ की लुब्दी तयार करने के लिये प्रति वर्ष २८ लाख मन अल्फा घास बाहर भेजा जाता है। यह खासकर इङ्गलैण्ड जाता है। ट्यूनिस में समुद्र से मछली मारने का काम भी होता है। बिज़र्टा, ट्यूनिस और धिबान की झीलों में मछलियां पाली जाती हैं। ट्यूनिस में १५ मछुए हैं जिनमें १० हज़ार ट्यूनिस निवासी और ४ हज़ार इटालियन हैं। पूर्वी तट पर स्पंज निकालने का काम होता है। मोनास्टीर से त्रिपोली की सीमा तक यह काम होता है। स्फ़ाक्स और केर्केनाह द्वीप मछली मारने के केन्द्र हैं।

आधुनिक स्थिति

१६३६ ई० में ट्यूनिशिया में अशान्ति आरम्भ हुई। हबीब बौरग्वीबा के नेतृत्व में वैधानिक सुधार दल ने एकाएक अपना रुख बदल दिया। यह दल जून १६३६ ई० से ट्यूनिस की फ्रांसीसी सरकार के साथ कर रहा था। इस दल ने करों का विरोध किया और फ्रांसीसी सरकार को उलट देने का प्रयत्न करने लगा।

ट्यूनिस-दर्शन

बिजर्टा में भीषण झगड़ा हो गया, ट्यूनिशियन ट्रेड यूनियन भंग हो गई। २५ मार्च १९३६ ई० को प्रोफेसर बेलहोने के भाषण पर फ्रैङ्को-ट्यूनिशियन सिदीकी कालेज बन्द हो गया और नगर की गलियों तथा सड़कों पर झगड़ा होने लगा। ट्यूनिशियन प्रजा अपनी पार्लियामेंट की बागडोर अपने हाथ में लेने की मांग मांगने लगी। ९ अप्रैल पैलेस डी जस्टिस (न्याय-महल) के सामने एक भीड़ एकत्रित हुई और उसने पुलिस के एक आदमी को मार डाला और सैनिकों के ऊपर ईंट पत्थर फेंके। इस पर फ्रांसीसी सेना ने गोली चला दी जिससे २० व्यक्ति मर गये।

इस पर वहां के रेज़ीडेंट ने नगर में घेरा डालने की घोषणा की। १४ अप्रैल को नियोडेस्टोर दल भङ्ग कर दिया गया। सेना ने बहुत से लोगों को गिरफ़ार किया गिरफ़ार लोगों में बैरग्वीला और उसके दूसरे साथी दोषी ठहराये गये। झगड़े के कारण सरकार ने कुछ घोषणाओं द्वारा स्वतंत्रता और संस्था के अधिकारों पर रोक लगा दी और सभाओं की मनाही कर दी।

उसके बाद २४ अक्तूबर को एम० ग्वीलन के स्थान पर एम० लबोन रेजीडेंट बनाया गया।

जब इटली में सेमिटिक के विरुद्ध सरकारी कार्रवाई हुई, तो ट्यूनिस की फैसिस्ट संस्था कमज़ोर हो गई। जब इटली ने ट्यूनिस, कार्सिका और नीस" की मांग फ्रांस के सामने रक्खी तो ट्यूनिस में फिर बलवा हो गया। ट्यूनिस में इटली का प्रभुत्व बढ़ने लगा। उसके बाद ७ जून १९३५ ई० को इटली ने लैवल-मुसोलिनी संधि को मानने से इंकार कर दिया।

३ सितम्बर १९३९ ई० को जर्मनी ने पोलैण्ड पर आक्रमण कर दिया जिसके फल स्वरूप द्वितीय महासमर का आरम्भ हो गया। जून १९४० ई० में फ्रांस का पतन हुआ तो ट्यूनिशिया, मरक्को और अल्जीरिया की स्थिति संकटमय हो गई। ट्यूनिशिया पर इटली अधिकार करना चाहता था इसी कारण उसने ट्यूनिशिया को फ्रांसीसी सरकार से मांगा भी था। जब रूस की स्थिति भीषण हो गई और रूस तथा समस्त संसार में द्वितीय युद्धक्षेत्र खोलने के सम्बन्ध में ज़ोर डाला गया तो ८ नवम्बर १९४२ ई० को अमरीका की सेना उत्तरी अफ्रीका के

बन्दरगाहों पर उतार दी गई अल्जीरिया पर अधिकार करने के पश्चात वह ट्यूनिशियन सीमा की ओर बढ़ी। जर्मनी ने भी अनधिकृत फ्रांस पर अधिकार कर लिया। कोर्सिका और सारडीनिया द्वीपों में धुरी सेना उतार दी गई। १२ नवम्बर को जर्मन सेना ने ट्यूनिस नगर पर अधिकार कर लिया और सारडीनिया तथा सिसली से धुरी सेना वायुयानों द्वारा ट्यूनिशिया में उतारी गई। १४ नवम्बर को आर. ए. एफ. के वायुयानों ने एल अवीना के (ट्यूनिशिया) हवाई अड्डे पर आक्रमण किया। बिजर्टा के समीप मित्र तथा शत्रु सेनाओं में मुठभेड़ हुई।

उत्तर की ओर मित्र-राष्ट्रों की सेना ट्यूनिस नगर की ओर दक्षिण की ओर क्यूबस नगर की ओर बढ़ी। क्यूबेस नगर लीबिया की सीमा से १०० मील की दूरी पर और बोन से ११० मील भीतर की ओर स्थित है। स्फाक्स से गाफसा १५० मील की दूरी पर है। वहां पहुँचने के लिये मित्र सेना को ओवेदस, ज़ेरौय और सिदी-ऐर की घाटियों का प्रयोग करना पड़ा। १६ नवम्बर को अमरीकन, ब्रिटिश और फ्रांसीसी सेना ने

ट्यूनिशियन सीमा को पार किया और भीतर की ओर बढ़ी। ट्यूनिस के हवाई अड्डे पर ब्रिटिश विमानों ने बम्ब वर्षा की। अल्जीरिया और ट्यूनिशिया की सीमा के पास वाले एक हवाई अड्डे पर अमरीकन सेना ने अधिकार कर लिया। जनरल पेतां ने लैवल को विची सरकार तथा फ्रांसीसी साम्राज्य के सम्बन्ध में पूर्ण शक्ति प्रदान कर दी।

बिज़र्टा की ओर बढ़ती हुई ब्रिटिश तथा अमरीकन सेना से जर्मन सेना की मुठभेड़ हुई। २२ नवम्बर को ब्रिटिश तथा अमरीकन सेना ने गेब के उत्तर-पश्चिम रेलवे लाइन पर अधिकार कर लिया। गेब भूमध्य सागर का एक बन्दरगाह है यह ट्यूनिस से १५० मील दक्षिण पश्चिम की ओर है बिज़र्टा और ट्यूनिस नगर पर ब्रिटिश अमरीकन तथा फ्रांसीसी सेना ने आक्रमण किया। गाफ्सा ओसिस से मित्र राष्ट्रों की सेना ने जर्मन सेना को निकाल बाहर किया।

केसरीन दर्रे के पास मित्र राष्ट्र की सेनाओं और जर्मन सेनाओं में घोर युद्ध हुआ। इसके बाद मारेथ लाइन पर घमासान लड़ाई हुई। मित्र सेनायें अल् हमा तक पहुँच गईं। पर युद्ध अभी चल रहा है।